P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-4* December- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

हरिद्वार में पर्यटक आगमन की स्थिति, समस्याएं और समाधान

ऋचा खरे
पूर्व शोध छात्रा,
भूगोल विभाग,
डी० बी० एस० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून,
उत्तराखंड

विनोद चंद्र पांडेय
रीडर एवं विभागाध्यक्ष,
भूगोल विभाग,
डी० बी० एस० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून,
उत्तराखंड

सारांश

शिवलिक पर्वतमाला के छोर पर बसा हरिद्वार गंगा के दायें किनारे पर $29^0$58′ उत्तर अक्षॉस एवं $78^0$10′पूर्वी देशांतर पर स्थित उत्तराखण्ड का दूसरा सबसे बड़ा नगर तथा प्रसिद्ध पर्यटक स्थल एवं हिन्दुओं का महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यहीं पर गंगा पर्वतों की तंग घाटी को त्याग कर समतल मैदान में प्रवेश करती है।

हरिद्वार एक ऐसा स्थान है जहां मेले वर्ष भर के पूरे उत्साह से आयोजित होते रहते है, जैसे सोमवती अमावस्या, कार्तिक पूर्णिमा, श्रावण पूर्णिमा, गंगा दशहरा आदि। जिससे यहाँ वर्षभर लाखो पर्यटक आते रहते है। भारतीय पर्यटक विकास विभाग की रिपोर्ट के अनुसार, जहां वर्ष 2000 में 53 लाख पर्यटक आये थे वहीं वर्ष 2025 में 70 लाख तक पर्यटको के आने का अनुमान है।

समय के साथ बढ़ती पर्यटक संख्या से जहां एक और रोजगार केअवसर बढ़े है तो वही दूसरी ओर कई समस्याओ भी ने जन्म ले लिया है जैसे अनियन्त्रित भीड़, अनियोजित निर्माण, चोरी और लूटपाट, होटलो और धर्माशालाओं की कमी, स्वछता का अभाव आदि। यह शोधपत्र हरिद्वार में पर्यटन की वर्तमान स्थिति का परिचय देता है। तथा वर्तमान में उत्पन्न हुई विभिन्न समस्याओं का वर्णन करते हुए उनके समाधान की संभानाओं पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द : हरिद्वार,उत्तराखंड, पर्यटक आगमन, तीर्थ स्थल, प्राकृतिक स्थल, धार्मिक स्थल।

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड भारत का सबसे पवित्रतम क्षेत्र माना जाता है। उत्तराखण्ड हिमालय पर्वत पर बसा है। हरिद्वार हिमालय की शिवलिक श्रेणी के तराई क्षेत्र में बसा है। हरिद्वार में गंगा नदी द्वारा शिवालिक पहाड़ियों को छिन्न–भिन्न किया गया है। गंगा नदी अपने उद्गमगौमुख (गंगोत्री ग्लेशियर के किनारे)से निकलकर और 253 किलोमीटर (157 मील) बहने के बाद, पहली बार हरिद्वार में उत्तर भारत के मैदानों में प्रवेश करती है, जिससे शहर को गंगाद्वार प्राचीन नाम से भी जाना जाता है। गंगा नदी हरिद्वार को एक पवित्र तीर्थ स्थल बनाती है। हरिद्वार का नाम कपिलाश्रम के कारण पहले पहल आता है, जब सूर्यवंशी राजा सगर के अश्वमेघ यज्ञ और उस अवसर पर छोड़े गये यज्ञाश्व को कपिल मुनि के आश्रम में बाँधे जाने का उल्लेख मिलता है।

हरिद्वार का मुख्य आकर्षण हर की पौड़ी है। पुराणों में कहा गया है कि दक्ष तथा देवों ने भगवान विष्णु से साक्षात्कार इसी स्थान पर किया था। इसलिये इस स्थान का नाम हरितीर्थ पड़ा। सांय के समय गंगा जी की आरती देखने योग्य होती है। हर की पौड़ी का विशेष महत्व है। मनसा देवी हरिद्वार का प्रसिद्ध मन्दिर है। तथा नील पर्वत पर चण्डी देवी मन्दिर है। हरिद्वार का चण्डी चौदस का मेला दूर–दूर तक विख्यात है। हरिद्वार में श्रवणनाथ मन्दिर, माया देवी, विष्णु घाट, नारायणी शिला, रामघाट, गणेश मन्दिर, भैरों अखाड़ा, बिल्वेश्वर, नील धारा, कनखल, ज्वालापुर, भीम गौड़ा, सप्तस्रोत आदि भी दर्शनीय स्थल हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. हरिद्वार के पर्यटन की वर्तमान स्थिति का विवरण तथा प्रतिवर्ष आने वाले देशी व विदेशी पर्यटको की संख्या का सांख्यिकीय विश्लेषण।
2. आगंतुकों को होने वाली विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश तथा,
3. उनका समाधान के सुझाव।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-4* December- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अध्ययन विधि

सरकारी एवं गैर सरकारी समंको पर आधारित। जिसके लिए इंटरनेट,पुस्तकों व विभिन्न शोधपत्रों का आश्रय लिया गया है।

साहित्यवलोकन

भारतवर्ष में विभिन्न विद्वानों के द्वारा लिखे गए शोध प्रबंध के अतिरिक्त देश के तीर्थ स्थलों ऐतिहासिक स्थलों पर्यटन स्थलों पर बहुत से लेख प्रकाशित हुए जैसे सरस्वती महोदय ने "होली सर्किट ऑफ नीमसार" पर शोध पत्र प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने तीर्थाटन और तीर्थ यात्रियों पर विस्तृत प्रकाश डाला। 1965 में उन्होंने "टेम्पल्स आर्गेनाइजेशन इन गॉड" पर लेख प्रस्तुत किया जिसमें पवित्र जीवन के निर्माण में पवित्र संस्थाओं की भूमिका का वर्णन किया गया है। सरस्वती महोदय का महत्वपूर्ण योगदान" काशी मिथ एंड रियलिटीः ए कल्चरल ट्रेडिशन" (1975) रहा, जिसमें उन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विभिन्न तत्वों पर प्रकाश डाला। इसी तरह एम. झा. महोदय ने (1969) में "दी सेक्रेड काम्प्लेक्स ऑफ़ जनकपुर" पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। आपने 1970 "दी सेक्रेड काम्प्लेक्स ऑफ़ रतनपुर" में पर भी कार्य किया। विभिन्न विद्वानों ने राजगिरी (1967), द्वारिका (1972), अयोध्या (1973), पुरी (1974), बैजनाथ धाम (1972) एवं पशुपतिनाथ (1973) आदि विभिन्न पवित्र स्थलों पर अपने शोध प्रपत्र तैयार किये है जो तीर्थाटन/पर्यटन के क्षेत्र में अपना महत्व रखते हैं।

वर्तमान में कई देशी विद्वानों ने उत्तरखंड पर्यटन के विभिन्न विषयो पर प्रकाश डाला है जिसमे से हिमाद्रि फुकन (2014) की "ए स्टडी ऑन टूरिज्म लोजिस्टिक्स इन दी स्पिरिचुअल साइट्स ऑफ हरिद्वार एंड ऋषिकेश इन उत्तराखंड", कला, चंद्र प्रकाश (2014) की "डेंगू, डिजास्टर एंड डेवलपमेंट इन उत्तराखंड हिमालयन रीजन ऑफ इंडिया रू चैलेंजेज एंड लेसंस फोर डिजास्टर मैनेजमेंट" एवं नौलखा, जितेन्द्र सिंहकी (2017) "मध्य गंगा घाटी की भौगोलिक स्थितिः एक अवलोकन" प्रमुख है।

पर्यटक आगमन की स्थिति

हरिद्वार एक ऐसा स्थान है जहां मेले वर्ष भर के पूरे उत्साह से आयोजित होते रहते है, जैसे सोमवती अमावस्या, कार्तिक पूर्णिमा, श्रावण पूर्णिमा, गंगा दशहरा आदि। श्रावण महीने में कांवड़ मेला बहुत लोकप्रिय है, जिसमें भगवान शिव के लाखों श्रद्धालु हरिद्वार में गंगा नदी के पवित्र जल को लेने के लिए आते हैं। इसके अलावा, कुंभ मेला और अर्ध कुंभ मेला क्रमशः 12 और 6 साल के अंतराल पर होता है। जिला प्रशासन भी गंगा नदी के तट पर 3–4 दिन का सांस्कृतिक उत्सव जैसे "हरिद्वार महोत्सव" और "आयुर्वेद महोत्सव" का आयोजन करता है। इसके अलावा पिरान कालियार के पवित्र दरगाह में प्रतिवर्ष "उर्स" का आयोजन भी होता है जिसमें सभी संप्रदायों के लोग भाग लेते हैं। निम्नलिखित तालिका में इस जिले में प्रति महीनों होने वाले त्योहारों मेलों तथा अनुमानित आगंतुकों की संख्या सहित दिया गया है।

तालिका 1. हरिद्वार में होने वाले मेलो/पर्वो का विवरण व उनमे आने वाले पर्यटकों कि अनुमानित संख्या

महीना	मेला/पर्व	पर्यटको की अनुमानित संख्या
जनवरी	मकर संक्रांति	2–2.5 लाख
फरवरी	महाशिवरात्रि	2 लाख
मार्च–अप्रैल	राम नवमी	2–3 लाख
अप्रैल	बैसाखी	8.10 लाख
मई	बुद्ध पूर्णिमा	3 लाख
	गंगा सप्तमी	2 लाख
जून	गंगा दशहरा	8–10 लाख
जुलाई	सोमवती अमावस्या	20–25 लाख
जुलाई–अगस्त	कांवड़ मेला	25–30 लाख
अगस्त	जन्माष्टमी	1 लाख
अक्टूबर	दुर्गा पूजा	3 लाख
नवंबर	कार्तिक पूर्णिमा	7–8 लाख
प्रत्येक महीने	एकादशी	2 लाख
	पूर्णिमा	2 लाख
	अमावस्या	2 लाख
जिस महीने में पड़ते है	सूर्य ग्रहण	4–5 लाख
	चंद्र ग्रहण	4 लाख

हरिद्वार में मुख्य रुप से पर्यटक संख्या एवं यात्रा श्रद्धा भाव से जनित रहती है। जिसे पर्यटन विकास की आवश्यकता से अधिक पौराणिक एवं धार्मिक जीवन को संरक्षित करने तथा नगर को निर्मल छवि करने की आवश्यकता है। मनोरम दृश्यावली युक्त पर्वतीय भाग की तलहटी पर स्थित, अनेक दार्शनिक स्थलों की उपलब्धता एवं समय–समय पर स्नान पर्वो की महत्ता के आकर्षण से यहां पर आवागमन वर्षभर रहता है। पर्यटन विकास परिषद, उत्तराखंड, देहरादून से पर्यटक आवागमन के आंकड़े एकत्र किए गए हैं। इन आंकड़ों के आधार पर प्रस्तावित हरिद्वार महायोजना हेतु पर्यटक आवागमन के प्राक्कलन से पूर्व विगत वर्षों की पर्यटक संख्या से ज्ञात हुआ कि मेला वर्षों की संख्या का सामान्य वर्षों की संख्या से कोई मेल नहीं होता है। वर्ष 1998 कुंभ मेला में पर्यटक आवागमन लगभग 58 लाख तथा वर्ष 2004 के अर्धकुंभ वर्ष में लगभग 63 लाख पर्यटक आवागमन आंकलित है जबकि वर्ष 1999 में 44.27 लाख एवं वर्ष 2003 मैं 55.32 लाख पर्यटक आवागमन रहा है ।

उत्तराखंड राज्य के गठन के पश्चात से वर्ष 2000 में पर्यटक संख्या 53.25 लाख से बढ़कर कमशः वर्ष 2003 में 55.32 लाख दर्ज की गई है। यही स्थिति आगे भी बने रहने की संभावना व्यक्त की जा रही है अतः वर्ष 2000 से 2003 तक लगभग 2.07 लाख की पर्यटक संख्या 3 वर्षों में बड़ी है। जो 69000 व्यक्ति प्रतिवर्ष होता है। यह स्थिति विशेष उतार–चढ़ाव से रहित तथा क्रमागत सामान्य वृद्धि को दर्शाती है। (चित्रक्रमांक 1 में देखें) अतः 70,000 पर्यटक संख्या की वृद्धि प्रतिवर्ष आंकलित करते हुए वर्ष 2011 में 60.92 लाख वर्ष 2021 में 67.92 लाख एवं महायोजनावधि 2025 में 71.25 लाख पर्यटक संख्या हरिद्वार हेतु अनुमानित की गई है। तालिका क्रमांक 2 में वर्तमान एवं प्रक्षेपित पर्यटक संख्या को दर्शाया गया है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-4* December- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका 2. हरिद्वार में आने वाले पर्यटकों की संख्या

वर्ष	हरिद्वार में पर्यटक आवागमन : वास्तविक एवं प्रक्षेपित			
	स्वदेशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक	कुल पर्यटक	वार्षिक प्रतिशत वृद्धि
1997	4070182	3569	4073751	––
1998	5811200	6187	5817387	+42.8
1999	4421974	4922	4426896	–23.9
2000	5316980	7659	5324639	+20.28
2001	5502273	6276	5508549	+03.25
2002	5518270	6029	5524299	+00.29
2003	5524432	7532	5531964	+00.14
2004	6283732	11012	6294738	+13.79
2011	6081000	11000	6092000	–03.22
2021	6779000	13000	6792000	+11.49
2025	7136000	14000	7150000	+05.27

चित्र 1. हरिद्वार में आने वाले कुल पर्यटकों का प्रति वर्ष हुए परिवर्तन का ग्राफीय प्रदर्शन

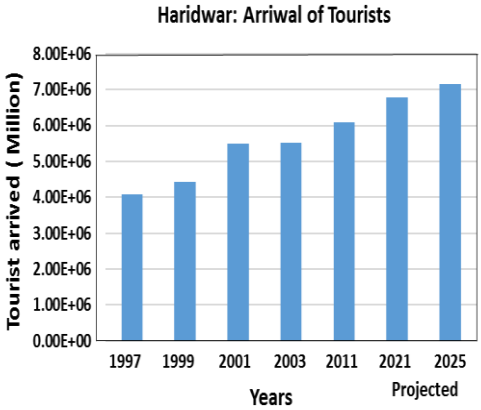

हरिद्वार पर्यटन की समस्याएं व समाधान

समस्याएं

पर्यटक और पर्यटन को विकसित करने वाले स्थानीय सामाजिक एवं प्राकृतिक तत्व जानकारी के अभाव में स्थानीय पर्यावरण के लिए विनाशकारी सिद्ध होते हैं। भारत जैसे विकासशील देश के लिए पर्यावरण सुरक्षा सर्वाधिक विचारणीय विषय है क्योंकि यहां जनसंख्या का सर्वाधिक निर्भरता प्राकृतिक संसाधनों पर ही है। पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जित करने की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग है किंतु यदि पर्यटन का विकास अनियोजित और अनियंत्रित ढंग से हुआ तो पर्यावरण पर इसके गंभीर कुप्रभाव को रोक पाना अत्यंत दुष्कर होगा। आधुनिक युग की विभिन्न आर्थिक गतिविधि में पर्यटन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भारत सरकार ने 1986 में इसे रोजगार के रूप में स्वीकारा है तथा इसके विकास हेतु प्रयासरत है। पूर्व काल में हमारे देश में तीर्थ पर्यटन प्रमुख रुप से व नैतिकता परिस्थितिक स्वच्छता तथा स्वः नियत्रित अनुशासन गुणों से संपन्न था। इन गुणों ने तीर्थ स्थलों के स्थानीय निवासियों को भी इन स्थलों की परंपरा को बनाये रखने में अत्यंत सहायता दी। साथ–साथ स्थानीय पर्यावरण के ऊपर कोई भी विपरीत प्रभाव देखने में नहीं आया है। इसके निम्न दो कारण हो सकते है– 1) पहले, तीर्थ यात्रियों की संख्या काफी काम थी, लम्बी व थकानयुक्त यात्रा के कारण ऐसा होता था, 2) दूसरे तीर्थयात्रियो की भारी श्रद्धा ने कंही भी स्थानीय लोगो व प्राकृतिक संशाधनो का शोषण नहीं किया। इन्ही बातों के कारण तीर्थाटन ने सामाजिक व पारिस्थिकीय बुराइयों को जन्म नहीं दिया। इसके विपरीत वर्तमान समय का तीर्थटन या पर्यटन अनेक समस्याओं से ग्रसित हो गया। लोगो की भक्ति श्रद्धा मानवीय भावना के ह्रास से अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। जिनमे से कुछ को इस प्रकार रखा जा सकता है–

1. तीर्थ पर्यटन में विशिष्ट स्थलों पर तीर्थ यात्रियों की बढ़ती हुई संख्या से पर्यटन स्थल के विकास में बाधा पहुँचती है।
2. ठहरने योग्य उपयुक्त स्थलों का आभाव। कई पर्यटन स्थलों में महगें व कम होटल, धर्मशालायें होती है। जिससे निम्न वर्ग के लोगो को परेशानी होती है। विशेष आयोजनों में ठहरने योग्य स्थल ही नहीं मिल पाता।
3. वर्तमान में पर्यटन स्थलो में चोरी, डकैती, लूटपाट, धोखाधड़ी जैसी समस्याओं का जन्म होने लगा है जो की पर्यटन के विकास में बहुत बड़ी बाधा है।
4. विशेष पर्वो पर या ग्रीष्म ऋतु में पर्यटकों के अधिक संख्या में आने के कारण परिवहन की सुविधाओं में कमी आ जाती है।
5. स्थानीय लोगो द्वारा पर्यटकों के शोषण की घटनाओं में वृद्धि होने लगी है जिससे पर्यटन में बाधा पहुँचती है।
6. पर्यटन स्थल पर आवश्यक सेवाओं का गिरते स्तर पीने का जल, कूड़ा करकट का ढेर, मल जल निकासी जैसी सुविधाओं का अभाव होता है, जो की पर्यटन स्थलों की कमजोरी को बयां करती है।
7. समझदार पर्यटकों की कमी के कारण प्राकृतिक पर्यावरण एवं सौन्दर्य का ह्रास होता है।
8. विदेशी व घरेलु पर्यटकों को पर्यटन स्थल पर उचित जानकारी के अभाव में गुमराह होना पड़ता है।

समाधान

उत्तराखंड में धार्मिक पर्यटन तो प्राचीन काल से चल रहा है अतः इस राज्य के लिए पर्यटन नई वस्तु नहीं है। शासनकाल में प्राकृतिक स्थलों को पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित करने का कार्य हुआ है। उत्तराखंड में पर्यटन स्थलों का जैसे–जैसे विकास हुआ है वैसे ही समस्याएं भी बढ़ रही है पर्यटन से संबंधित प्रकार की समस्याओं का उचित समाधान होना चाहिए अन्यथा राज्य के पर्यटन व्यवसाय पर इसका विपरीत असर पड़ेगा। पर्यटन की विभिन्न समस्याओं का समाधान इस प्रकार दिया जा सकता है–

1. धार्मिक स्थलों पर बढ़ती हुई पर्यटकों की संख्या को ध्यान में रखकर विकास की नई योजनाएं बनाई जाए।
2. ठहरने योग्य आरामदायक किंतु सस्ते धर्मशाला और होटल बनाए जाएं।

3. अधिकांश स्थलों की धर्मशालाएं जीर्ण–शीर्ण है उन में जल की तथा शौचालय की उत्तम सुविधा नहीं है उनका पुनः जीर्णोद्धार किया जाए।
4. निरंतर तेजी से बढ़ती पर्यटकों की संख्या के कारण, चोरी डकैती, लूटपाट, धोखाधड़ी की समस्याएं बढ़ रही है।जिन को रोकने के लिए सुरक्षा के उचित प्रबंध किए जाएं। पुलिस बल बढ़ाया जाए। अन्यथा इन घटनाओं का विदेशी पर्यटकों पर बुरा प्रभाव पड़ता है और वे ऐसे स्थलों पर आना बंद कर देते हैं जिससे राज्य की आय पर काफी असर पड़ता है।
5. पर्यटक संख्या बढ़ाने के कारण पर परिवहन पर दबाव बढ़ जाता है, परिवहन के साधन नहीं हो पाते हैं तथा परिवहन के साधनों की कमी से विभिन्न प्रकार के वाहनों के रेट बढ़ जाते हैं, जिससे पर्यटक बुरी तरह से प्रभावित होता है। अतः राज्य सरकार को परिवहन मंत्रालय को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।
6. तीर्थ स्थलों पर भारी भीड़ पहुंचने के कारण वहां वस्तुओं का अभाव हो जाता है और इनकी कीमत एकदम से बढ़ जाती हैं। जिससे निम्न वर्ग के तीर्थ यात्रियों को आर्थिक परेशानी बढ़ जाती है। अतः ऐसी समस्या के निदान हेतु सरकार को मूल्य नियंत्रण पर ध्यान देना चाहिए तथा आवश्यक उपभोक्ता सामग्री की कमी नहीं होने देना चाहिए।
7. स्थानीय लोगों द्वारा पर्यटकों के शोषण को रोकने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
8. आवश्यक सेवाओं के गिरते स्तर को रोका जाना चाहिए। पेयजल की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। गंदगी कूड़ा कचरे के ढेर ना दिखाई पड़े अतः सफाई की पर्याप्त व्यवस्था हो एवं मल जल निकास की उचित व्यवस्था होना आवश्यक है।
9. प्राकृतिक पर्यावरण एवं सौंदर्य का जो ह्रास हो रहा है उसे रोका जाना चाहिए।
10. पर्यटन स्थलों पर भारी भीड़ भाड़ को रोकने का उचित प्रबंध होना चाहिए ताकि कोई अनहोनी घटना ना घटे।
11. दुर्घटनाओं की संख्या में बहुत वृद्धि हो रही है उसे रोकने के उचित उपाय किए जाना चाहिए।
12. पर्यटन स्थलों में विद्युत की, रोशनी की उचित व्यवस्था होना चाहिए।
13. विदेशी व घरेलू पर्यटको को पर्यटन स्थल पर उचित जानकारी के अभाव में गुमराह ना किया जाए।
14. प्रायः कुशल, प्रशिक्षित गाइडों का अभाव पाया जाता है या वे पर्यटकों से बहुत ज्यादा मोल तोल करते हैं। अतः सरकारी प्रशिक्षण गाइड हो जो कई भाषाएं जानते हो एवं जिनका रेट निश्चित हो।
15. धार्मिक स्थलों पर पर्यटकों को भिखारी बहुत तंग करते हैं उन पर नियंत्रण किया जाना चाहिए।
16. कई धार्मिक स्थलों, मंदिरों में बंदरों का आतंक होता है जो पर्यटकों से छीना–झपटी के अलावा काट लेते हैं, भयभीत करते हैं। इन स्थानों से पकड़वाकर जंगलों में छोड़ देना चाहिए ताकि उनके आतंक से मुक्ति मिल सके।
17. निजी टूर ऑपरेटरों व टैक्सी चालकों द्वारा पर्यटकों के शोषण को रोका जाना चाहिए।
18. पर्यटन स्थलों को देखने वाले को इस तरह शिक्षित किया जाए कि वह पर्यटन स्थल को स्वच्छ, साफ सुथरा एवं प्रदूषण मुक्त रखें।
19. पर्यटकों को स्मारकों पर अपने नाम लिखने या अंकित नहीं करने चाहिए। ऐसी अभद्रता स्मारकों को क्षीणता के गर्त में धकेल देती है।

निष्कर्ष

हरिद्वार के प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल तो है, साथ ही प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है, यहॉ के प्राकृतिक सौन्दर्य की विशिष्ट छटा है। हरिद्वार एक तरह से उत्तराखण्ड का प्रवेश द्वार है जहॉ से सम्पूर्ण राज्य के तीर्थ स्थलों एवं पर्यटन स्थानों में पहुँचा जा सकता है।

इस धार्मिक नगरी में हमेशा मेले व उत्सव होते रहते है तथा लाखो पर्यटक प्रति वर्ष यहाँ आते रहते है। भारतीय पर्यटन विभाग के आंकड़े के अनुसार, जहाँ वर्ष 2000 में 53 लाख पर्यटक आये थे तथा यह संख्या बढ़कर 2025 में लगभग 71 लाख होने की सम्भाना है। इसके अलावा यहाँ पर हुए अपूर्ण तथा अनियोजित विकास ने कई समस्याओं को भी जन्म दिया है। इस शोध पत्र में विभिन्न समस्याओ का चिंतन करते हुए उनके कई सुझाव दिए गए है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Uttarakhand tourism policy (2017), Department of Tourism, Government of Uttarakhand, India, pp 13-15*
2. *बंसल, सुरेश चंद्र (2006), पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन आधारभूत सिद्धांत,मीरा प्रकाशन,सहारनपुर,पृष्ठ संख्या 234*
3. *नौलखा, जितेन्द्र सिंह (April 2017),मध्य गंगा घाटी की भौगोलिक स्थितिः एक अवलोकन, Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika,vol-4, issue-8, pp 24-30*
4. *Himadri, Phukan (Sep. 2014), A Study on Tourism Logistics in the Spiritual Sites of Haridwar and Rishikesh in Uttarakhand, International Journal of Emerging Technology and Advanced Engineering, Vol 4, Issue 9, pp 165-170*
5. *नेगी, जगमोहन (1999), पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 78*
6. *World Travel and Tourism Council (2016), Travel and Tourism-Economic impact, India, pp 1-3*
7. *पोद्दार, हनुमान प्रसाद (1996), तीर्थंक, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या 103*
8. *Karar, Arnab (2010), Impact of Pilgrim Tourism at Haridwar, Anthropologist, Vol 12, issue 2, pp 99-105*
9. *Aggarwal, Adarsh Kumar, Guglani, Meenal, and Goel, Raj Kumar (May 2008), Spiritual & Yoga Tourism: A case study on experience of Foreign Tourists visiting Rishikesh, India, Conference on Tourism in India Challenges Ahead, Indian Institute of Management Kozhikode, India*
10. http://www.rishikeshtourism.in/Haridwar_Tourism.html